Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

दिनांक
28-2-2019
(गुरुवार)

"सत्य" का अविष्कार

सभी पुण्य आत्माओ को मेरा नमस्कार - - - - -

"समर्पण ध्यान संस्कार" एक नया "अविष्कार" - - - - -

मनुष्य की आवश्यकता की अविष्कार जननी होता है, ठिक इसी प्रकार से आज की वर्तमान परिस्थीती, मनुष्य का एक तरफा विकास और वैचारीक प्रदुषण, की परिस्थीती के कारण ही "मनुष्यता" आज समुचे "विश्व" मे ही समाप्त हो रही है यह सभी समाज की स्थिती को देखकर ही हिमालय के ऋषी मुनीयो ने अपनी लगातार ८०० साल की साधना के बाद "समर्पण ध्यान संस्कार" का "अविष्कार" किया है, अब प्रश्न उठता है, यह सब क्यो किया और यह सब करने का मुल "उद्देश" क्या था।

मुल उद्देश तो यह था की मनुष्य के भितर की "मनुष्यता" को जगाना क्योंकी "मनुष्यता" को जाग्रत करने के लीये पहले जो प्राचीन उपासना पद्धतीया विकसीत हुयी थी- उपासना पद्धती थी से मेरा आशय (धर्म) से है, वास्तव उपासना पद्धतीया ही थी जिन्हे बाद मे (धर्म) ही कहा जाने लग गया।

वे सारी उपासना पद्धती (धर्म) केवल और केवल इसी लिये समाज मे लायी गयी थी की मनुष्य जानवर से मनुष्य हो सके वास्तव मे पहले मनुष्य का जीवन एक जानवर जैसा ही था आज का मनुष्य तो हजारो सालो के बाद बना है, सभी उपासना पद्धतीया एक विशेष पद्धती और "उपदेश" के आधार पर बनी होती- थी समय के अनुसार उपासना पद्धतीयो मे अवश्य ही भिन्नता थी पर एक सबसे बडी समानता थी की सभी उपासना पद्धतीयो का एक ही समान उद्देश था की मनुष्य के भितर की "मनुष्यता" को जगाना लेकीन हुआ उलटा ही जो उपासना पद्धतीया (धर्म) मनुष्यता को जाग्रत करने के लिये बनायी गयी उन्ही का मनुष्य ने दुरुपयोग कीया। और अपने निजी स्वार्थ के लीये, अपनी ही बात को मनवाने के लिये, और सत्ता को पाने के लीये, ही हजारो सालो से इनका उपयोग होने लगा।

और इसी कारण से मनुष्य ने उपासना पद्धतीयो की ही सहायता से "मनुष्यता" को ही नष्ट करने का कार्य करने लग गया। उपासना पद्धती के नाम पर सत्ता का संघर्ष होने लगा "युद्ध" होने लगे आप इतीहास उठाकर पढ़ लो आप देखोगे की उपासना पद्धती (धर्म) के नाम पर जितना नरसंहार "विश्व" मे हुआ है, अन्य कीसी भी कारण से नही हुआ है,

"नरसंहार" को मनुष्य उपासना पद्धती का कार्य समझ कर बडे आनंद से और प्रसन्नता के साथ करता था यह बात समाज मे रहने वाले किसी भी मनुष्य के "ध्यान" मे नही आयी क्योकी प्रत्येक मनुष्य कीसी न कीसी उपासना पद्धती से तो जुडा ही था। लेकीन यह सब उन "गुरुदौग" के गुरुओ के "ध्यान" मे आ गया क्योकी वे समाज मे नही हिमालय पर बैठे थे।

हिमालय के गुरुओ ने इस बात का खुब गहराई से अध्ययन किया तो उन्होने जाना की सभी तो समाज की उपासना पद्धतीया (धर्म) अच्छी ही है, पर सभी ही उपासना पद्धतीया (धर्म) "उपदेश" पर ही आधारीत होती है, और यही कारण है, की वे मनुष्य सुसंस्कृत बनाती है, शांन्त व समाधानी भी बनाती है, और सभी मनुष्य को "आज्ञाचक्र" तक ही पहुचा पाती है,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

"आज्ञाचक्र" तक पहुचने के बाद मनुष्य को "निर्विचारीता"
की स्थीती प्राप्त हो जाती है. और मनुष्य को बडा
अच्छा लगता है.
प्राचीन समय मे मनुष्य अधीक भावनात्मक था और
अधीक संवेदनशील था इस लीये इन उपासना पद्धती-
(धर्म) से वास्तव मे मनुष्य के भितर की मनुष्यता
जाग्रत होती थी लेकीन समय के साथ मनुष्य
भावनात्मक स्थिती संवेदनशीलता कम कम होने लगा
गयी और क्रियाशीलता बढने लगी सुर्यनाडी अधीक
विकसीत होने लग गयी। बुद्धी का विकास एकतरफा
ही दुनीया मे होने लग गया और फिर समाज का
संतुलन ही समाप्त हो गया इन कारणो से "मनुष्यता"
ही समाप्त होने लग गयी।
ह्रास। इस लीये होने लगा क्योकी सारी उपासना पद्धतीया
उपदेशो पर ही आधारीत थी मनुष्य उपदेश एक कान से
सुनता था और एक कान से निकाल देता था इसीलीये
कोई भी उपासना पद्धती ऐसी नही थी जिसके सभी लोग
अच्छे हो सभी उपासना पद्धतीयो मे अच्छे भी लोग
थे और बुरे भी लोग थे और सैकडो उपासना पद्धतीया
थी और सैकडो "देवता" था परमात्मा जब एक है,
तो उसके हजारो "रुप" कैसे हो सकते है, लेकीन सबकुछ
मानने के उपर ही था,

परमात्मा मानना मनुष्य का एक भाव है, वह परमात्मा कैसी को भी मान सकता है, इस लीये एक परमात्मा की हजारो मान्यताएं थी और यह मान्यताएं ही विवाद का विषय हो गयी। प्रत्येक मनुष्य "अहंकार" के कारण मेरा ही परमात्मा श्रेष्ठ कहने लग गया। परमात्मा तो निराकार ही है, पर परमात्मा के "आकार" और "रूप" के विवाद मे ही मनुष्य बंटने लग गया। और मनुष्य समाज मे विभिन्न विवाद खडे होने लग गये।

यह परिस्थिती का अध्ययन कर के ही हिमालय के गुरुओ ने एक आत्म अनुभुती का नया मार्ग का "अविष्कार" किया वे तो जानते ही थे पर वे यह "आत्म अनुभुती" दुसरो को करा सके ऐसा अविष्कार कई गुरुओ और ८०० साल की सतत साधना के बाद वह करने मे सफल हुये, फिर प्रश्न था इस अनुभुती को समाज मे कैसे पहुचाया जाय क्योकी वे तो इतने अधिक संवेदनशील हो गये थे की वे तो कभी भी समाज मे आ ही नही सकते थे फीर सालो तक प्रयास कर के सालो की प्रार्थना के बाद परमात्मा ने ही एक रोसी "दिव्यआत्मा" को इस कार्य के लीये तैयार कीया। जीसके "माध्यम" से यह कार्य हो सके।

अब आगे समस्या थी की वे "माँ" "बाप" कब मिलेगे जीनके माध्यम से यह दिव्य आत्मा धरती पर जन्म ले सके 40 साल के बाद ऐसे "माँ" "बाप" तैयार हो सके जो ऐसी आत्मा को जन्म दे सके. बाद मे जाकर ही "आत्मा" का जन्म हुआ.

कई साल इस आत्मा को हिमालय मे घुमाने मे भी लग गये और फीर शिवबाबा को वह दिव्य अनुभुती सौंपने का कार्य सौंपा गया वह कार्य करना ही अब उनके जिवन का उद्देश था वह कार्य उन्होने पुर्ण कर देहत्याग कर दिया। बाद मे हिमालय के अन्य ऋषी और मुनीयो ने भी उसी आत्मा को अपना "ज्ञान" सौंपकर मुक्ती प्राप्त कर ली क्योकी ज्ञान के साथ भी "मोक्ष" नही मील सकता हैं। एक "सामान्य रिक्त मनुष्य" को "माध्यम" बनाकर यह "समर्पण ध्यान संस्कार" की अनुभुती समाज मे आ पायी यह विश्व के प्रत्येक मनुष्य के लिये बनायी गयी है. इसमे कोई भी 'उपदेश' नही हैं, कोई भी व्यक्ती इस अनुभुती को ग्रहण कर अपनी "आध्यात्मीक प्रगती" करके इसी जिवन मे "मोक्ष" की स्थिती प्राप्त कर सकता हैं, ये निम्नलीखीत "मान्यताओ" पर आधारीत हैं, ये "मान्यता" क्या हैं, वह हम आगे देखते हैं

|| जय बाबा स्वामी ||

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

(1) परमात्मा की मान्यता

"परमात्मा" के रुपों की अलग
अलग मान्यताएं समाज मे देखी जा सकती है, पर
कोई भी रुप या आकार ऐसा नही है, जिसे सारा विश्व
के मनुष्य मानते हो और यह रुप ही विवाद का कारण है,
यह देख कर हिमालय के गुरुओ ने इसमे रुप ही नही
रखा है, इसलीये इसमे कोई रुप नही है,
जिस प्रकार से मिट्टी को आकार देकर किसी भी "देवता"
का रुप हाथो से दिया जाता है, ठिक वैसा ही मनुष्य
अपने भाव से कीसी भी रुप मे परमात्मा को देख
सकता है, याने "रुप" और "आकार" की निर्मीती सदैव
मनुष्य अपने भाव से ही करता है, परमात्मा तो निराकार
ही है, आकार तो मनुष्य अपनी एकाग्रता करने के लिये
करता है।

मनुष्य का मन बडा चंचल है, वह निराकार को कभी भी
पकड नही पाता इस लीये मन को एकाग्र करने के
लिये उसने "रुप" और "आकार" बना लीया। यह ठिक
वैसा ही है, जैसे प्रायमरी की स्कुल मे बच्चे एक बॉल
खसकाते है, और कहते है, १ दुसरी बॉल खसकाते
ने पर ही कहते है, २ तीसरा बॉल खसकाने पर
ही कहेंगे 3 याने उनके पास बॉल नही हो तो
वे १,२,३ नही बोल सकते है।

"परमात्मा अविनाशी है, वह कल भी था आज भी है, और कल भी रहेगा" याने स्पष्ट है, कोई भी शरीर "परमात्मा" हो नहीं सकता क्योंकी कोई भी शरीर ऐसा नहीं है, जो सदैव ही रहे इसी कारण आज तक किसी ने नहीं कहा की मैं ही "परमात्मा" हु, क्योंकी जिन्हे लोग आज परमात्मा कह रहे है, वे भी "सत्य" जानते थे की वे परमात्मामय है, पर परमात्मा नहीं है, वे परमात्मा से जुडे हुये थे पर वे परमात्मा नहीं थे।

परमात्मा को आजतक किसी ने भी देखा नहीं है, फिर भी सभी परमात्मा को मानते है, याने कोई अज्ञात चैतन्य शक्ती परमात्मा है, उसका कोई आकार, या रुप नहीं है, आकार और रुप मनुष्य ने अपनी कल्पना से ही दिया है, परमात्मा के रुप मे यह अज्ञात शक्ती सदैव रहती ही है, और परमात्मा को न मानने वाले मनुष्य होते है, और उनका भी जीवन व्यवस्थीत चलता है, याने जिवन के लीये परमात्मा को मानना आवश्यक नहीं है, इसलीये परमात्मा को न माननें वालो की संख्या "नगण्य" होती, मनुष्य परमात्मा को किसी न किसी रुप मे मानते ही रहता है, परमात्मा को न मानने वालो को "नास्तीक" कहा जाता है,

|| जय बाबा स्वामी ||

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

कई "बुद्धावादी" मनुष्य परमात्मा को नहीं मानते है, पर वे "प्रकृती की शक्ती" को अवश्य मानते है, याने वे यह मानते है, कोई अज्ञात शक्ती इस जगत मे है, और उसी शक्ती के कारण इस संसार का संचालन होता है।

समर्पण ध्यान संस्कार विधी मे परमात्मा की यह मान्यता है, परमात्मा एक विश्वव्यापी चैतन्य शक्ती होती है, और वह विश्व के कण कण मे व्याप्त है, और इसी अज्ञात शक्ती से ही आज ये सारा जगत चल रहा है, उसका कोई "आकार" या "रुप" नही है, वह दिखती नही है, पर वह जहाँ वह सामुहीकता मे होती है, वहाँ वह अनुभव अवश्य होती है, और परमात्मा के सानीध्य मे आत्मा को सदैव अच्छा लगता है;

हम पहाडो पर जाते है तो वहाँ पत्थरो की सामुहीकता होती है, हजारो पत्थर हजारो सालो से सामुहीक रुप मे रह रहे है, तो वहाँ भी परमात्मा की शक्ती सामुहीकता मे होने से हमे उसके सानीध्य मे अच्छा लगता है, किसी नदी के कीनारे पर भी हम जाते है, तो नदी मे लाखो पानी कण निरन्तर बहते रहते है, और सामुहीक रुप मे होने के कारण वहाँ भी परमात्मा की शक्ती अनुभव होती है;

और नदी के किनारे पर बैठ कर हमको अच्छा लगता है, ऐसा ही अनुभव हमे "समुद्र" के किनारे बैठ कर भी आता है. मनुष्य की संवेदनशीलता कम होने के कारण प्रत्येक कण कण मे बसे "परमात्मा" के शक्ती का उसे अनुभव नही हो पाता है, पर जहां परमात्मा की शक्ती सामुहिक रूप मे तो वहां मनुष्य को अच्छा लगता है, सदैव अच्छा लगना परमात्मा की अनुभुती से ही होता है, यह विश्वचेतना शक्ती कल भी थी आज भी है, और कल भी रहेगी।

इस विश्व की चैतन्य शक्ती को ही "समर्पण ध्यान" मे "परमात्मा" माना जाता है, और साधक को इसमे इस परमात्मा की शक्ती पर ही "चित्त" रखने को कहा जाता है, और साधक की साधना पुर्ण होने के बाद वह यह शक्ती जहां भी उसे तुरन्त ही वह अनुभव होने लगता है. अपने "सहस्रार चक्र" से साधक इस शक्ती से जुडकर एक "आत्मिक आनंद" की "दिव्य अनुभुती" को अनुभव करता है, कुछ साल ध्यान करने के बाद उसे अनुभव होता है, की वह परमात्मा की शक्ती तो मेरे भी अन्दर विधमान है, और वह अपना "गुरु" स्वंयम हो जाता है, और उसे भितर से ही सब मार्गदर्शन मीलने लगता है।

(२) धर्म की मान्यता

प्राय हम समाज मे देखते है, की "उपासना की पद्धती" को ही "धर्म" कहा जाता है, वास्तव मे धर्म तो सभी मनुष्यो का एक ही है, क्योकी वे सभी "मनुष्य" है,

प्रत्येक मनुष्य के भितर एक "विवेक ज्ञान" होता है, वह ज्ञान से मनुष्य को पता लगता क्या अच्छा है, और क्या बुरा है, मनुष्य को क्या करना चाहिये क्या नही करना चाहीये और उसी "विवेक ज्ञान" को ही जाग्रत करने के लीये सारी उपासना पद्धतीया बनायी गयी है, सभी उपासना पद्धतीयो मे एक ही प्रकार के उपदेश होते है, अच्छी बाते करो और बुरी बाते छोडो यह बात सभी उपासना पद्धती मे समान रुप से ही पायी जाती है,

अच्छी बाते करो और बुरी बाते छोडो यह उपदेश कर मनुष्य के भीतर के मनुष्यता को जगाने का प्रयास होता है, पर यह इतना लंबा होता है, की इतने सालो मे मनुष्य का जिवन ही समाप्त हो जाता है, मनुष्य जन्म लेते समय अपने साथ उपासना पद्धती को लेकर नही जन्मता है, जिस घर मे जन्म लेता है, उस घर की उपासना पद्धती उस पर लगा दी जाती है,

मनुष्य अपने अंहकार के कारण उपासना पद्धतीयो मे समानता क्या है, वह नही देखता वह देखता भिन्नता क्या है, और भिन्नता तो समय और परिस्थीतीयो के कारण हो गयी है, उपासना पद्धतीयो भिन्न भिन्नता होने के बावजुद एक ही समानता है, वह है, समान उपदेश अच्छी बाते करो और बुरी बाते छोडो और उपासना की पद्धती बाहरी है, उपासना की पद्धती बदलने से भीतर कुछ बदलाव नही होता है, मान लो एक लडके के पेट मे "दर्द" हो रहा है, हम उसे अस्पताल ले गये उसने जो सफेद कपडे पहने थे वे निकालकर "लाल" कपडे पहना दीये तो उसका पेट दर्द ठीक होगा क्या नही लाल कपडे निकाल कर "पीले" कपडे पहना दीये तो पेट दर्द ठीक होगा क्या नही पेट दर्द के लिये उसके पेट मे ही कोई दवाई देना होगी, ठिक इसी प्रकार उपासना पद्धती बाहरी है, वह बदलने से आत्मा की प्रगती संभव नही है, आत्मा की प्रगती के लीये भितर आत्मा की जाग्रती की आवश्यकता होती है, मेरे गुरुदेव कहते थे "जिस प्रकार "आत्मा" प्रत्येक जन्म मे अपना नया शरीर धारण करती है, ठीक वैसे ही प्रत्येक जन्म मे नयी उपासना पद्धती वाले घर मे जन्म लेती है, शरीर बदलता है, वैसे ही उपासना पद्धती भी बदलते रहती है, दोनो ही स्थायी नही है, स्थायी है, "आत्मा" तुम उसको महत्व दो।

अब जिसे "हिन्दु धर्म" कहते है, वह भी भारतीय संस्कृती है, जो भारत मे रहने वाले ऋषी मुनीयो ने प्राकृतीक वातावरण मे प्रकृती से जुडकर निर्माण की है, "हिन्दु संस्कृती", संस्कृती अती प्राचीन संस्कृती है, समय होने के बाद वही (धर्म) उपासना पद्धती कहलाने लग गयी।

भारतीय ऋषी मुनीयो ने "वसुधैव कुटुंबकम" की कल्पना की थी की विश्व एक दिन एक परिवार जैसा होगा अब यह कल्पना तो कीसी एक देवता व उपासनापद्धती से पुर्ण हो नही सकती है, जब तक मनुष्य का शरीरभाव समाप्त नही होता यह कल्पना संभव नही है,

वे ज्ञानी थे और उन्होने कल्पना की थी याने वह कल्पना पुर्ण होने का मार्ग भी था वह मार्ग था "ध्यान" और "ध्यान" ही एकमात्र मार्ग है, जिसमे मनुष्य की आत्मा इतनी सशक्त हो जाती है, की शरीर भाव तो पुर्ण यह समाप्त हो जाता है, और किसान का आत्मधर्म जाग्रत हो जाता है, और प्रत्येक मनुष्य के भितर की मनुष्यता जाग्रत होती है,

इसमे मान्यता है, की हमारे शरीर की उपासना की पद्धतीया भले ही अलग अलग हो पर हमारे आत्मा का धर्म एक ही है, "मनुष्य धर्म" हम सभी मनुष्य ही है, मनुष्य का मुल स्वभाव है, प्रेम करना मनुष्य यह आत्मज्ञान प्राप्त करने के बाद सभी मनुष्यो से प्रेम करने लगता है,

(3) सदगुरु (माध्यम)

हम हमारे जिवन मे देखते है। एक कीसान एक विशेष स्थान पर रोज नियमीत पानी देता है, खाद, भी डालता है, और आप जब उसे पुछते ऐसा क्यो नियमीत करता है, तो वह कहता है मेरी इच्छा है, इस स्थान पर एक अच्छे किस्म का "आम का पेड" उग जाये तो आप उसे कहते अरे मुर्ख बीना बीज के कभी वृक्ष उग सकता है क्या ?

लेकीन यही मुर्खता तो हम हमारे जिवन मे भी तो कर रहे है, हमारे पास आध्यात्मीक शक्ती का "बीज" ही प्राप्त नहीं है, और हम "आध्यात्मीक स्थिती" प्राप्त करना चाहते है, और उसके लीये विभीन्न प्रयास भी कर रहे है, मेरे 60 साल के अनुभव के आधार पर यह विश्वास से कह सकता हु की बीना "सदगुरु की कृपा" के आध्यात्मीक प्रगती कभी भी संभव ही नहीं है,

सदगुरु वह शरीर का "माध्यम" होता है, जिसने अपने जिवन मे परमात्मा को पा लीया है, वह परमात्मा को इसलीये पा चुका क्योकी वह संपुर्णतह रिक्त हो चुका तो परमात्मा की चैतन्य शक्ती उसके भितर से ही बहने लग गयी। प्राय: ऐसे सदगुरु समाज को त्याग चुके होते है, वे समाज मे नही मीलते है, वे "प्रकृतीरूप" हो चुके होते है, इसलीये ऐसा सदगुरु जिवन मे समाज मे मीलना कठीन है।

ये सदगुरु इतने संवेदनशील होते है, की वे समाज मे
अपने सशक्त "आभामंडल" के कारण कभी भी आ ही नही
सकते है, और उनका आभामंडल (ओरा) इतना सशक्त
होता है, की उनके आभामंडल कोई भी व्यक्ती उनकी इच्छा
के बीना प्रवेश ही नही कर सकता है, तो ऐसे "सदगुरु"
समाज के किसी मनुष्य को मीलना तो असंभव ही है।
इनके भितर से "परमात्मा का चैतन्य शक्ती" इस लीये बहता
है, क्योकी इनका शरीरभाव पुर्ण तह समाप्त हो चुका होता है,
ये शरीरधारी होते है, पर "मै" का "अहंकार" पुर्ण तह समाप्त
हो चुका होता है.
"मै" का कर्ताभाव पुर्ण तह समाप्त हो जाने के कारण ये
कुछ भी नही कर सकते है, क्योकी कुछ भी करने का
इनमे किसी के लीये भी भाव ही नही होता है, ये एकदम
रीक्त पाईप के समान होते है, जिस प्रकार पाईप जितना
खाली हो पानी उतने ही शक्ती के साथ बहता है,
ये स्वंयम कुछ भी नही करते पर आप इनके "माध्यम" से
परमात्मा की शक्ती से कुछ भी प्राप्त कर सकते है, याने
ये करते नही पर इनके सानिध्य मे होता है।
आत्मा की आध्यात्मीक प्रगती के प्रथम आवश्यक होता है,
आत्मसाक्षात्कार याने आप शरीर नही एक आत्मा हो यह ज्ञान
यह ज्ञान रुपी "कृपा" ये तभी कर सकते है, जब उनके
सदगुरु ने उन्हे ऐसा करने के लिये "अधीकृत" किया हो
तभी उनके "माध्यम" से आत्मसाक्षात्कार मील सकता है,

सारा आध्यात्म ही "अधिकृत" शब्द के साथ बँधा रहता है, यह आत्मज्ञान उन्होंने भी अपने गुरु से गुप्तरूप से प्राप्त किया होता है, और जब तक उनका सद्गुरु उन्हें "अधिकृत" नहीं करता तब तक यह आत्मज्ञान वे दे ही नहीं सकते हैं, याने आत्मज्ञान का बीज प्राप्त करने के लीये हमें "अधिकृत सद्गुरु" मीलना आवश्यक होता है,

ऐसा सद्गुरु तो आपको मिलने के लीये दिव्य शरीर की ही ऐसा सद्गुरु तो आपको मिलने के लीये दिव्य शरीर की ही आवश्यकता होती है, ऐसा दिव्य शरीर आत्मा को कई जन्मो जन्मो के बाद प्राप्त होता है, क्योंकी पवीत्र "माँ" "बाप" जब तक नहीं मिलते तब तक यह संभव नहीं होता आत्मज्ञान पा सके ऐसा दिव्य शरीर भी होना चाहीये

"आत्मसाक्षात्कार" सब कुछ नहीं है, यह तो केवल "मोक्ष" की स्थिती पाने का साधन है, कई आत्माएं केवल "आत्मसाक्षात्कार" पाना यह लक्ष्य लेकर ही जन्म लेती है, और वे अपने जिवन में "आत्मसाक्षात्कार" ले के भी "मोक्ष" की स्थिती नहीं प्राप्त कर पाती है,

इस लीये जो आत्मा "मोक्ष" पाने का लक्ष्य लेकर ही जन्म लेती है, और वे अपने जिवन में "आत्मसाक्षात्कार" पाकर साधनारत हो जाती है, और अपने ही जिवन काल में "कर्ममुक्त अवस्था" को प्राप्त करती है, जिसे "मोक्ष" कहते है, इसलीये मोक्ष की स्थिती पाने के लिये मोक्ष का ही लक्ष्य तय करना आवश्यक होता है

॥ जय बाबा स्वामी ॥

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

"आत्मसाक्षात्कार" भी सद्गुरु देता नही है, पर उसके सानीध्य मे ही प्राप्त हो सकता है, वह तो शरीर के लेन देन से परे होता है, तो "आत्मसाक्षात्कार" भी वह कैसे दे सकता है।

फिर यह आत्मसाक्षात्कार की घटना कैसे घटती है, यह समझ लो एक मोमबत्ती अपने ही स्थान पर जल रही है, और उसके प्रकाश को देख कर अगर किसी बुझी हुयी मोमबत्ती की इच्छा हुयी की मुझे भी जलना है, मुझे भी प्रकाशीत होना और वह बुझी हुयी मोमबत्ती वह जलती हुयी मोमबत्ती के पास जाकर जल उठती है, तो जलती हुयी मोमबत्ती ने बुझी हुयी मोमबत्ती को जलाया क्या नही पर बुझी हुयी मोमबत्ती जलती हुयी मोमबत्ती के कारण ही जल उठी बस ठीक ऐसी ही प्रक्रीया सद्गुरु रुपी माध्यम के सानीध्य मे होती है;

अधीकृत सद्गुरु के सानीध्य मे आप हो और आप पुर्ण भाव से इच्छा भी करे की मुझे आत्मसाक्षात्कार मीलना चाहीये तो भी मील सकता है, बस आपको आपके भाव को ही माध्यम बना कर ग्रहण करना होगा

अधीकृत सद्गुरु वह परमात्मा रुपी चैतन्य शक्ती का वह "माध्यम" होता है। जिसके माध्यम से परमात्मा हम तक पहुचता है, और आप भी अधीकृत सद्गुरु के माध्यम से परमात्मा तक पहुच सकते है। सब कुछ आपके भावदशा पर ही निर्भर होता है।

इसमे "अधीक्षत सदगुरु" को ही परमात्मा की शक्ती प्राप्त करने का माध्यम माना जाता है, उसे ही परमात्मा का माध्यम है, यह मान्यता है,

एक अपने ही जैसे सामान्य मनुष्य को परमात्मा माध्यम मानना इसमे सबसे बडी कठीण बात होती है, क्योकी सदैव हमारा "मैं" का अहंकार आडे आता है, हम सभी मानते है, की परमात्मा अंश प्रत्येक मनुष्य मे होता ही है, अगर हमे "अधीक्षत सदगुरु" मे परमात्मा का अंश दिख सका तो हम प्रत्येक मनुष्य मे भी वह परमात्मा का अंश देख पायेगे,

"अधीक्षत सदगुरु" वैसे तो एक सामान्य मनुष्य का ही शरीर होता है, पर इसके भितर की "आत्मा" एसी होती है, जिसके साथ लाखो आत्माओ की सामुहिक शक्ती होती है, और आत्माओ की सामुहीकता को नाम ही "परमात्मा" है,

आत्माओ की सामुहीकता के कारण "अधीक्षत सदगुरु" के दर्शन से भी मन को शांन्ती प्राप्त होती है, एक प्रकार विशेष आत्मा को आंनद प्राप्त होता है, आप मे "आत्मभाव" जितना होगा उतना ही अनुभुती का आंनद आपको प्राप्त होगा, ऐसा अधीक्षत सदगुरु समाज मे मीलना तो असंभव है, क्योकी कोन अधीक्षत सदगुरु हिमालय मे बैठे अपने सदगुरु का "सानीध्य"

का "त्याग" करके इस मनुष्य समाज मे आयेगा कोई भी नही हिमालय मे "गुरुसंग" मे तो इस समाज का विचार भी नही आता तो इस समाज मे आने का तो प्रश्न ही नही है,

ऐसा "अधिष्ठित सद्गुरु" समाज मे तो नभी आ सकता है, जब गुरुआज्ञा से उसे भेजा गया तो वह समाज मे आ भी गया तो भी उसके "जिवनकाल" मे बहुत कम ही लोग उससे जुड पाते है, और केवल वही लोग जुड पाते है, जो "वर्तमान काल" मे जीते हो, और वर्तमान काल मे जीने वाले लोग कम ही होते है और प्राःय मनुष्य भुतकाल मे ही जिता है, इसलीये समाधीस्थ गुरु को मान सकता है, पर जिवंत सद्गुरु को नही मान सकता है, इसलीये अधीष्ठित सद्गुरु की जानकारी प्राःय समाज को इनके "समाधीस्थ" होने के बाद ही हो पाती है।

सामान्यतह सद्गुरु के साधना के कार्यकाल की जानकारी समाज को नही हो पाती है। सद्गुरु का वह कठीण समय और उसके जिवन के लाखो असफल आध्यात्मीक प्रयासो को समाज कभी जान ही नही पाता है, समाज को तो वह आध्यात्मीक ऊंचाई पर पहुचने के बाद ही दिखता है, पर प्रत्येक सद्गुरु के जिवन का साधना व तपस्या का कठीण समय होना ही है, "सोना" सदैव तप कर ही कुंदन बनता है,

(4) आत्मसाक्षात्कार का "संस्कार" -

एक पवीत्र आत्माने एक पवीत्र आत्मापर किया गया यह एक "संस्कार" ही है, यह कोई पद्धती नही है, जो कोई किसी को सीखा सके या कोई किसी से सीख सके जब शिष्य की आत्मा अपने सद्गुरु की आत्मा से समरस हो जाती है, तो जो ज्ञान सद्गुरु के भितर होता है। वह सद्गुरु की आत्मा से शिष्य की आत्मा मे संक्रमीत सहजता से हो ही जाता है,

सांयस के विद्यार्थी इसे इसतरह से समझ सकते है, की सांयन्स की लॅब मे एक यु ट्युब (U) होती है। जिसके दो सिरे होते है, पर वह भितर से जुडी होती है, आप अगर एक सीरे मे डाले तो 50 ML 100 ML पानी एक पानी एक सीरे मे डाले तो 50 ML पानी सहजता से दुसरे सीरे मे भी चला जाता ही है, और इसके लीये अलग से कुछ करना ही नही पडता है,

एक "अधीकृत सद्गुरु" के सानीध्य मे रहकर अगर कोई भी आत्मा सद्गुरु की आत्मा के साथ समरस हो जाती है. और वह "प्रार्थना" करती है, की आपका आत्मज्ञान की अनुभुती आपकी कृपा मे मुझे प्राप्त हो तो तुरन्त ही उस आत्मा को आत्म अनुभुती का अनुभव होने लगता है, मन शांत हो जाता है,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

मन के सारे विचार बंन्ध हो जाते है, आत्मिक आनंद का अनुभव होता है, और उसके ही सानीध्य मे रहने को मन करता है,

इसमे यह "मान्यता" है, किसी अधीकृत सदगुरु के माध्यम से जब तक हम आध्यात्मीक ज्ञान का बीज नही ग्रहण करते तब तक आध्यात्मीक प्रगती कभी संभव ही नही है.

अब मन मे प्रश्न उठता है, की आध्यात्मीक ज्ञान की अनुभुती पाने के लीये क्या क्या जिवन मे छोडना होगा। तो इसमे कोई उपदेश नही आप जैसे हो वैसे के वैसे भी आप यह अनुभुती ग्रहण कर सकते हो।

सदगुरु आत्मा को जन्म देने वाली "माँ" है, होती है। जिस प्रकार से शरीर को जन्म देने वाली माँ एक ही होती है, वैसे ही आत्मा को जन्म देने वाली माँ भी एक ही होती है। "माँ" जिस प्रकार कैसा भी स्विकार करती है, वैसे ही यह सदगुरु भी आत्मा की "माँ" वह भी स्विकार करता है,

"आत्मसाक्षात्कार" के बाद यह बात स्पष्ट स्पष्ट समझ मे आ जाती है, की परमात्मा की चैतन्य शक्ती भले ही सारे विश्व मे फैली हो पर मुझ तक पहुचने के लीये परमात्मा ने सदगुरु के शरीर को ही "माध्यम" बनाया है, और मुझे अनुभुती हुयी है, याने "सदगुरु का शरीर" वह पुल है, जहाँ से परमात्मा मुझ तक पहुचा है, तो ठीक उसी "पुल" के "माध्यम" से मै भी परमात्मा तक पहुच सकता हु,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

"आत्मसाक्षात्कार" केवल आध्यात्मीक स्थिती का प्रारंभ होता है. वह पाकर साधक को साधना कर के वह स्थिती जीवन मे प्राप्त होती है, जिसे मोक्ष की स्थिती कहते है.

"आत्मसाक्षात्कार" पाने के बाद मनुष्य का स्वभाव "निरीक्षण" से "आत्मपरीक्षण" वाला हो जाता है. सामान्य तह मनुष्य का स्वभाव निरीक्षण करने का होता है, कोई भी बात देखेगा तो तुरंत "निरीक्षण" करेगी ये ये नहीं होना चाहीये, ये होना चाहीये, ऐसा नही ऐसा होता तो ज्यादा अच्छा, इस पर यह कपडे का रंग नही सुट करता है, ये आदमी जाडा है, पतला होना तो अच्छा होता इस दाल मे नमक कम होता तो अच्छा होता यहाँ भीड कम होती तो अच्छा होता यहाँ भिड ही नही है, याने हरबात मे मन निरीक्षण करके अपनी "रिपोर्ट" तैयार करते रहता है. और "चित्त" का नाश करते रहता है,

आत्मसाक्षात्कार के बाद यह "निरीक्षण" करने वाला लोगो का स्वभाव एक क्षण मे "आत्मपरीक्षण वाला" हो जाता है, मै जो गालीया देते रहता हु, यह अच्छी आदत नही है. मै जो झुठ बोलता हु यह अच्छी आदत नही है. मै जो सदैव ही नकारात्मक विचार करता हु, यह अच्छी आदत नही है,

|| जय बाबा स्वामी ||

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

मैं जो नियमित ध्यान साधना मे नहीं बैठता यह अच्छी-
बात नहीं है, मेरी किसीसे भी नहीं पटती है, यह कुछ
अच्छे लक्षण नहीं है,
"आत्मसाक्षात्कार" के बाद एक क्षण मे ही मनुष्य का चित्त
"अन्तरमुखी" हो जाता है, और उसे अपने ही दोष दिखना
प्रारंभ होता है, और जब उसका चित्त उसके ही दोषों-
पर जाता है, तो उसके दोष दूर होने लगजाते है।
कुछ साल की साधना के बाद परमात्मा उसके ही
भितर है, यह अनुभव होने लग जाता है, और-
उसकी परमात्मा की खोज बंद हो जाती है। और
उसे उसके जिवन मे परमात्मा की प्राप्ती हो गयी यह
जिवन का सबसे बडा समाधान प्राप्त हो जाता है,
एक बार वह सदगुरु के शरीर के भितर के परमात्मा
की अनुभुती करता है, तो बाते घटीत होती है, एक
तो किसी को भी परमात्मा मानना गुणग्राहकता की
चरम सीमा है, इस प्रकार एक ओर उसकी गुणग्राहकता
(रिसीव्हींग) बढ जाती है, दुसरी ओर एक मनुष्य के
शरीर से परमात्मा को देखना आ गया तो वह प्रत्येक
मनुष्य के शरीर मे विद्यमान परमात्मा को भी अनुभव
करने लगता है, और सभी से प्रेम करने लगता है,
और मनुष्य के भितर का मनुष्यधर्म जाग्रत हो
जाता है,

|| जय बाबा स्वामी ||

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

(5) समर्पण ध्यान —

आत्मसाक्षात्कार पाना ही सब कुछ नही होता है. "आत्मसाक्षात्कार" पाने के बाद सालो ध्यान साधना को समय देना पडता है, ध्यान करना यह शब्द ठिक नही है, मनुष्य को सब कार्य करने की इतनी आदत सी लग गयी है, की वह ध्यान भी करता है, अरे बाबा "कर्ता" का भाव ही समाप्त करना ध्यान है, तो ध्यान करना मे "कर्ता" तो है न. ध्यान मे जाना चाहिये ध्यान एक आत्मा की परमात्मा से संमन्ध स्थापीत करने की अवस्था है,

वास्तव मे कुछ नही करना ही ध्यान है. आप शरीर से भी कुछ नही कर रहे हो और मन से भी विचार नही कर रहे हो यह ध्यान की स्थीती है, ध्यान मे जाने पुर्व अपेक्षा रहीत होकर ध्यान मे जाना चाहिये क्योकी अपेक्षा सदैव ही ध्यान साधना को अवरोध करती है। क्योकी अपेक्षा का संमन्ध शरीर के साथ होता है, सदैव शरीर की ही "अपेक्षा" होती है. आत्मा की कभी कोई "अपेक्षा" नही होती है, ध्यान तो आत्मा और परमात्मा के बीच संमन्ध स्थापीत करने का ही सशक्त माध्यम है; इस लीये कीसी भी "अपेक्षा" के साथ ध्यान साधना मे न बैठे।

॥ जय बाबा स्वामी ॥

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

यहाँ तक की आप मोक्ष की स्थिती पाने की भी अपेक्षा से ध्यान साधना न करे आप जैसे जैसे ध्यान मे उतरते जायेंगे वैसे२ आत्मा सशक्त होते जायेगी और आपको वह आगे ले जायेगी।

भारतीय संस्कृती मे शिवमंन्दीर होते है. शिवमंन्दीर मे मंन्दीर के भितर कोई मुर्ती नही होती केवल शिवजी के प्रतीक के रुप मेंही एक शिवलींग होता है. और मंन्दीर के बाहर एक नंदी (बैल) बैठा होता है, मेरे गुरुदेव इसका अर्थ समझाते हुये कहा था की मंन्दीर का शिवलींग (आत्माओ का समुह) परमात्मा का प्रतीक है, और सामने बैठा नंदी सशक्त आत्मा के समर्पण का प्रतीक है.

इस का अर्थ यह है. आप जैसे२ ध्यान साधना करते जाओगे आपकी आत्मा सशक्त होते जायेगी और आत्मा सशक्त होगी तो वह स्वंयम ही आपके जिवन सभी "अटेचमेंन्ट" दुर करते जायेगी. आप सभी के बीच मे रहोगे पर अटेचमेंन्ट किसी से भी नही रहेगा. आप सबके बीच रहकर भी मुक्त रहोगे. और यह सब करना नही पडेगा स्वंयम ही होगा. क्योकी आत्मा आपके भीतर के शरीरभाव को कम करते जायेगी क्योकी आपके भितर का आत्मभाव बढते जायेगा।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

"समर्पण ध्यान" के माध्यम से आध्यात्मीक प्रगती के लिये सुबह का ध्यान अकेले मे करे आपके आसपास कोई मनुष्य न हो ऐसा करने से आप का चित्त सशक्त होना प्रांरभ होगा.

और धिरे २ आपके आसपास एक आपका ही "आभामंडल" बनना प्रांरभ होगा और आपको ही आपके भितर से एक आवाज सुनाई देना प्रांरभ होगी. इस आवाज को ब्रम्हनाद (परमात्मा के चैतन्य) की आवाज कहते है, वह आवाज को सुनकर आपको आत्मानंद का अनुभव होगा और आप जब यह सुन रहे हो जब कोई भी व्यकती आपके पास मे आयेगा तो यह बंन्द हो जायेगी.

आप को शाम का ध्यान सामुहीकता मे सेन्टर पर जाकर ही करना है, आप जब सामुहीकता मे सैकडो अन्य साधको के साथ बैठकर ध्यान करेगे तो आपको आपका चित्त पर नियत्रंण करना भी आ जायेगा याने आप बैठे तो सैकडो लोगो के बीच मे लेकीन फीर भी आप भितर रह कर बैठ सकते है, यह दोनो ध्यान आवश्यक है, अकेले का ध्यान चित्त को सशक्त करता है, और शाम का ध्यान चित्त को नियत्रीत करता है, कार तेज चलाते भी आना आवश्यक है, और तेज कार को नियत्रंण करना भी उतना ही आवश्यक होता है, इस लीये दोनो ही ध्यान आवश्यक है,

|| जय बाबा स्वामी ||

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

अपने जिवन मे हम जैसे फुटबॉल का मैच देखना अपना शौक बनाते है, हमको फुटबॉल का मैच देखकर हमारे कोई काम नही होते है, केवल हमारा "शौक" है, इसलीये हम "फुटबॉल" का मैच देखने जाते है, ठिक वैसा ही ध्यान मे जाईये केवल ध्यान करके आपको अच्छा लगता है, इस लीये ध्यान मे जाये।

"समर्पण ध्यान" विश्व का कोई भी व्यकती कर सकता है, वह किसी भी जाती भाषा, धर्म, रंग, देश, लींग, का क्यो न हो यह सभी मनुष्यो के लीये खुला हुआ है, यह सारे विश्व मे "निशुल्क" सिखाया जाता है, आज विश्व के २२ से अधीक देशो मे कीया जा रहा है, आज "लाखो आत्माऐ" इस ध्यान से जुडी है,

हम समाज मे देखते है, मनुष्य की सुवीधा के लिये नये नये "अवीष्कार" होते ही रहते है, उद्देश्य एक होता है, मनुष्य को जीवन मे अधीक से अधीक सुवीधा प्रदान करना और मनुष्य के कार्य आसानी से हो जाय या मनुष्य को अच्छे से अच्छे यातायात के और सम्प्रेषण के साधन उपलब्ध हो ताकी मनुष्य का जिवन अधीक सुखकारी हो आरामदायक हो और प्रत्येक "अवीष्कार" मनुष्य की बुद्धी की खोज होती है, पहले मनुष्य को आवश्यकता नीर्माण होती है, और बाद मे आवश्यकता पुर्ती हेतु "अवीष्कार" होता है,

"अवीष्कार" तो एक मनुष्य ही करता है, पर केवल उसके देश के लोग नही पुरा विश्व ही उस "अवीष्कार" का लाभ लेता है, याने "अवीष्कार" प्रत्येक मनुष्य के लीये होता है, जो मनुष्य उस "अवीष्कार" से प्राप्त नये साधन का उपयोग करना चाहे तो विश्व का कोई भी मनुष्य वह साधन का उपयोग - अपने देश मे भी रह कर सकता है,

कोई भी अवीष्कारक सदैव ही अवीष्कार करते समय यह अवीष्कार का लाभ सभी मनुष्य को ऐसे विश्वस्तर के विशाल विचार और सोच रखकर ही करता है, तो बाद मे सारी मनुष्य जाती ही उस अवीष्कार से लाभ लेती है, याने आपकी सोच जितनी विशाल होगी उस अवीष्कार का उपयोग भी विशाल होगा अब यह बात हुयी हमारे भौतिक जगत के अवीष्कार की जैसे एक कार की कंपनी बाजार मे कोई भी नयी कार लायेगी तो वह अपनी पुरानी वाली कार से अधिक "आधुनिक उपकरण" व सुविधा लेकर ही लायेगी याने कार के "मॉडल" मे सदैव सुधार और प्रगती होते ही रहती है, हम इस भौतिक जगत मे रहते है, इस लीये यह सब बाते हमे पता चलते रहती ही है,

क्या "आध्यात्मीक जगत" मे इतने सालो हिमालय मे स्थित ऋषी मुनीयो ने कोई प्रगती नही की होगी ? अवश्य की ही होगी पर हम उस जगत मे नही है, इस लीये हमे उसका ज्ञान नही है,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

सालो पहले ऐसा था की कोई ऋषी मुनी वर्षो ध्यान-साधना करके जो आध्यात्मीक ज्ञान, और आध्यात्मीक शक्तीया, प्राप्त करता था वह अपने जिवन के अन्तीम समय किसी "सुपात्र शिष्य" को "आत्मसाक्षात्कार" करा के दे देता था और अपना "देह त्याग" करता था क्योंकी ज्ञान के साथ भी मोक्ष नही मीलता मोक्ष की स्थीती पाने के लीये हमे ज्ञान से भी मुक्त होना पडता है, और यह परम्परा सालो से चल रही थी और इसी शिष्य के हाथो वह अपना अन्तीम संस्कार भी करवाता था।

और जब तक सुपात्र शिष्य नही मीलता सालो तक इन्हे उस सुपात्र शिष्य का इंतजार करना पडता था। क्योंकी आत्मज्ञान से भी मुक्त होना आवश्यक था अपनी शरीर की "प्राणशक्ती" पुर्ण उपयोग कर वे आत्मसाक्षात्कार कराते थे। और आत्मसाक्षात्कार कराने के बाद इनके जिवन मे कोई लक्ष्य ही नही रह जाता था तो वे स्वंयम प्राणत्याग कर देते थे

आत्मसाक्षात्कार वह अपने जिवन की कीमत दे कर ही करते थे याने "आत्मसाक्षात्कार" इतना आसान कभि नही था और अपने जीवन भर की कमाई इयी आध्यात्मीक ज्ञान की शक्ती भी अपने शिष्य को यह विश्वास कर के देते थे की वह इस ज्ञान को आगे जिवीत रखेगा।

॥ जय बाबा स्वामी ॥

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

८०० सालो के आध्यात्मीक अनुसंधान और रिसर्च
के बाद उन्होंने एक रिक्त शरीर को अपनी इच्छाशक्ती
से ही निर्माण किया जो "कमल" के समान हो याने वह
समाज के किचड मे भी रहे तो किसी कीचड का दाग
उसके उपर न हो और वह सदा अपना "चैतन्य" रुपी
"सुगन्ध" समाज को देता रहे
उन्होने रिक्त व्यक्ती का शरीर इसलीये तैयार कीया
क्योकी उच्च आध्यात्मीक स्थिती वाला व्यक्ती इस
समाज रह ही नही सकता क्योकी वह अतीसंवेदन
शील हो जाता है, यह रिक्त मनुष्य एकदम खाली
"पाईप" के समान था। इस शरीर का स्वंयम की कोई इच्छा
नही थी कोई उद्धेश नही था कोई ज्ञान नही था इस
रिक्त शरीर से ज्ञान दिया जा सकता था और समाज
मे रह कर जो दोष आते है, वे भी निकाले जा सकते
थे उसे सदैव शुद्ध व पवीत्र रखा जा सकता था, और
इस मनुष्य के शरीर से लाखो लोगो तक इस "आत्मज्ञान"
को पहुचाना था इसलीये सर्वसामान्य मनुष्य ग्रहण
कर सके ऐसा उसे बनाया गया था और ८०० सालो
की साधना व तपस्या से प्राप्त ज्ञान व शक्तीया उस
"सामान्य मनुष्य" के शरीर मे प्रवाहीत कर उसे सभी ने
अपना माध्यम के रुप मे "अधीकृत" किया ऐसा करना
भी आध्यात्मीक जगत का सबसे बडा "अवीष्कार" है,
और वह ठिक से काम कर रहा है या नही यह

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||

|| Whole World is a Family ||

"निरीक्षण" करने के लीये और इस शरीर को "सुरक्षीत" रखने के लीये ११ गुरुओ पर जवाबदारी दी गयी वे ११ गुरु सदैव ही इस शरीर के साथ ही सुक्ष्म रुप मे होते ही है।

यह शरीर का निर्माण अपनी साधना के शकती से करना सबसे बडा "अवीष्कार" है, और इसी कारण एक सामान्य से चेहरे वाले, सामान्य सी उंचाई वाले, सामान्य शक्ती वाले मनुष्य का निर्माण कर आज विश्व मे ही असामान्य कार्य कर दीया है, अन्यथा एक सामान्य से "ग्रहस्थ" व्यकती से विश्वस्तर का कार्य होना कभी संभव ही नही था

पहले जो ऋषी मुनी जिवन भर मे केवल एक व्यकती को ही आत्मसाक्षात्कार करा पाते थे आज इस व्यकती के "माध्यम" से लाखो लोगो तक करा पा रहे है, इस व्यक्ती का शरीर ही "माध्यम" बना है, इस "माध्यम" की उपलब्धीयाँ तो "माध्यम" के बाद जब वह "समाधीस्थ" होगा उसके बाद अधीक अनुभव होगी। इस "माध्यम का कार्य का विस्तार "समाधीस्थ" होने के बाद सही अर्थ मे प्रारंभ होगा, अभी ही इतना बडा कार्य हुआ है, तो बाद मे कीतना होगा इसकी हम कल्पना ही कर सकते है।

संक्षेप में —

हिमालय के गुरुओं ने ८०० साल की साधना के बाद एक आत्म अनुभूती पर आधारीत समर्पण ध्यान संस्कार को बनाया है, और "उद्देश" है, इस विश्व में "मनुष्यता" जाग्रत हो और यह केवल में एक पवीत्र आत्मा हु यह ज्ञान होने पर ही हो सकती है, यह उनका "विश्वास" है,

"वसुधैव कुटुंबकम" की की हमारे पुर्वजो की कल्पना साकार करने के उद्देश से ही यह सब कीया है,

(1) परमात्मा — की मान्यता है, वह एक विश्वव्यापी शक्ती है, जिसे अनुभव किया जा सकता है

(2) धर्म — हम सभी मनुष्य है, तो हमारा धर्म "मनुष्यधर्म" है,

(3) सदगुरु — यह वह "माध्यम" होता है, जिसके माध्यम से परमात्मा का चैतन्य हमतक पहुचता है, यह रिकत "पाईप" है,

(4) आत्मसाक्षात्कार का संस्कार — यह एक पवीत्र संस्कार है, यह कोई पहचान नही है,

(5) समर्पण ध्यान — यह एक नियमीत साधना है, जो साधक को नियमीत रूप से सामुहीकता मे रहकर करना होती है,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

आध्यात्मीक जगत का यह नया "अवीष्कार है" यह प्रत्येक मनुष्य का कल्याण हो सके इस लीये हिमालय के अनेक गुरुओ ने सामुहीक प्रयास से बनाया है। एक "माध्यम" को माध्यमबना कर वे सारे विश्व मे विश्व शांन्ती व विश्वकल्याण के लीये बांट रहे है,

यह सारे विश्व मे ही "निशुल्क" बांटा जाता है, इसे कोई भी मनुष्य ले सकता है, इसमे जाती, धर्म, देश भाषा, लींग आदी का भेद नही कीया जाता है, मनुष्य के भितर की "मनुष्यता" को जागृत करना ही इसका मुख्य उद्देश है,

आप सभी को इस अवीष्कार से लाभ हो और आप इसी जिवन मे "मोक्ष" की स्थिती पा सके यही प्रभु से प्रार्थना है। आप सभी को खुब खुब आशीर्वाद

आपका अपना
बाबा स्वामी
28/2/2019